विश्व में हिंदू मंदिरों के रहस्य

सनातन धर्म के हमारे प्राचीन इतिहास में पुराना कुछ भी नहीं है - यह कालातीत, ज़राहीन अर्वाचीन एवम अतिप्राचीन भी है! ज्यादा बेहतर है कि हम उन्हें याद करते रहें और तथ्यों को इतना इतना याद रखें कि जल्द ही हम उन्हें पुनर्स्थापित करने में सक्षम हो जाएँ। पुनर्जागरण जिन्दा रहने वाले, फलते-फूलते लोगों और संस्कृतियों को ही हासिल होता है, मात्र वो जिनका अस्तित्व के लिए संघर्ष समाप्त हो जाता है संग्रहालयों में चले जाएँगे।

जिम्बाब्वे से लेकर अयोध्या तक दुनिया में हर जगह हिंदू मंदिरों के पहले से ही अस्तित्व है, और सब हमारे इतिहास को शब्दों से ज़्यादा बेहतर अपने मौन से बताते हैं जो कि दिल में किसी भी भाषण की तुलना में बेहतर तरीके से पहुँचता है । एक बार फिर पूरी दुनिया में मानवता और विश्व की खातिर हमें हिंदू धर्म, संस्कृति और सभ्यता के पुनर्जागरण को प्राप्त करना चाहिए । शब्द 'हिंदू ' हाल ही में प्रयोग होना शुरू हुआ होगा, लेकिन यह इंगित करता है वैदिक सनातन धर्म उसी तरह से पुरातन एवम कालातीत है जैसे ज़रा-हीन पहाड़, महान नदियाँ और महासागर।

हमारे प्रख्यात इतिहासकार सामान्यतः और विशेष रूप से अफ्रीका के सन्दर्भ में बाकी दुनिया के साथ और 'इस्लाम पूर्व भारत' के संबंध के बारे में अधिक खोज नहीं करना चाहते. वास्तव में वे भी पहले से मौजूद हिंदू संस्कृति और भारत में ही सभ्यता के बारे में ज्यादा ध्यान केन्द्रित करना नहीं चाहते हैं। तो ऐसे लोगों के लिए पुनर्जागरण का सवाल ही पैदा नहीं होगा । उन्हें, जिनकी सिर्फ निंदा की जानी चाहिये, उपेक्षा करते हुए बाकी हम ईमानदारी से अपनी विरासत का खुद पुनरुद्धार कर सकते हैं ।

प्राचीन हिंदुओं के हाथों में ग्रेनाइट मक्खन की तरह मूर्तियां गढने के लिये लचीला बन जाता था और पत्थर के उपकरण जो अभी भी उप्लब्ध हैं संगीत सृजन करते थे. कोई सीमेंट इस्तेमाल नहीं किया गया था लेकिन फिर भी पत्थर उम्र के लम्बे अंतराल के बाद भी अभी तक टिके हैं. तो औपनिवेशिक शासन के बाद विनाशकारी खंडहर ही अब इसके गवाह हैं.

"जब तक शेर अपनी कहानी लिखना नहीं शुरू करते, तब तक शिकारियों द्वारा लिखित इतिहास ही मान्य होगा।" - एक अफ्रीकी कहावत।

जिम्बाब्वे में मंदिर:

जिम्बाब्वे जिसका अर्थ 'महान घर' है के बारे में कुछ जानकारी है, बहुत ज्यादा नहीं! जिम्बाब्वे में प्राचीन पत्थर के सैकड़ों खंडहर बिखरे हुए हैं. उनके निर्माण में कोई सीमेंट या मोर्टार का इस्तेमाल नहीं किया गया था. इसके निर्माण के लिये ध्यान से ग्रेनाइट ईंटों आकार का निर्धारित होता था और छंटनी के के बाद तो इन्हें एक पहेली की तरह एक साथ फिट किया जाता था. कुछ दीवार दस मीटर ऊंचीं थीं। कई में शहतीर लगे थे या आड़ी-चिनाई या चेकर पैटर्न बनाये गये थे. सबसे बड़ा संकुल जो एक मंदिर हो सकता है को 'ग्रेट जिम्बाब्वे' के रूप में जाना जाता है. इसकी प्रवेश-सीढी कला का एक उत्कृष्ट काम है और इसका गठन इस प्रकार है कि दीवारों से बाहर निकलती प्रत्येक सीढी वक्र रूप में घटते हुए प्रवेश द्वार को पहुँचती है. घटते क्रम में सीढी के आकार में वृद्धि अद्वितीय संरचना है. अंदर जटिल नक्काशी के ग्रेनाइट पत्थर पाए गए हैं। कला एवम तक्नीक का भारत से सम्बन्ध स्पष्ट है. यह मन्दिर संकुल संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व धरोहर स्थलों में शामिल है।

क्या ईसाई वेटिकन मूल रूप से एक शिव मंदिर है?

इतिहासकार पी.एन. ओक ने दावा किया है कि शब्द वेटिकन मूल रूप से संस्कृत शब्द "वाटिका" से आया है और "क्रिस्टीएनिटी” (ईसाई धर्म) संस्कृत शब्द "कृष्ण-नीति" (कृष्ण की तरह) का अपभ्रंष है, और यह भी कहा कि "इब्राहीम" शब्द संस्कृत शब्द " ब्रह्मा से आया है। उन्होंने आगे दावा किया है कि दोनों ईसाई और इस्लाम धर्म ने वैदिक मान्यताओं की विकृतियों के रूप में जन्म लिया है। दो चित्रों की तुलना करें और एक शिव लिंग के आकार और वेटिकन चर्च परिसर के बीच एक सटीक समानता देखेंगे।

इन तस्वीरों में ‘त्रिपुंड’ (भगवान शिव द्वारा पहना तीन रेखाओं वाला तिलक) पर एक नज़र डालें। शब्द 'वेटिकन' भी संस्कृत शब्द वाटिका से लिया गया है, जो इस तरह के यज्ञ-वाटिका के रूप में वैदिक, सांस्कृतिक या धार्मिक केन्द्रों के लिये प्रयुक्त होता है. इस प्रकार के शब्दों के अर्थ से और खोजों से साबित होता है कि ‘वेटिकन’ एक हिन्दू (वैदिक) धार्मिक केंद्र था जिसके अवलंबियों को 1 शताब्दी ईस्वी से ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया था।

इसके अलावा, कुछ रिपोर्टों के अनुसार, एक शिव लिंग खुदाई के दौरान यहाँ मिला था और एक इसे रोम के संग्रहालय में प्रदर्शनी के लिए रखा गया है। यह शिवलिंग ग्रेगोरियन इट्रस्केन संग्रहालय, वेटिकन सिटी में प्रदर्शित किया गया है। यह 9 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से लौह युग उदय-काल की वस्तुओं के साथ रोम में सबसे महत्वपूर्ण इट्रस्केन संग्रह है ।

कंबोडिया का खोया हिन्दू साम्राज्य

भारत के तत्कालीन इतिहास में रुचि रखने वालों के लिये कंबोडिया की एक यात्रा की सिफारिश की जाती है. यह इक दृष्टि से किसी भी भारतीय के लिए आवश्यक है. देश भर में कई सौ हिंदू और बौद्ध मंदिरों के खंडहर, विशेष रूप से सिएम रीप शहर के चारों ओर बड़ी झील टोन्ले साप के पास! सिएम रीप देश का हृदय है। यहाँ दर्शनीय मंदिर अंगकोर वाट लगभग नौ सौ साल से शान के साथ खड़ा है।

विशाल मंदिर एक एक वर्ग मील से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है । हिंदू पौराणिक कथाओं की कहानियों को पत्थर की दीवारों मे मूर्ति रुप में उत्कीर्ण किया गया है. हिंदू मान्यतानुसार ब्रह्मांड के केंद्र पौराणिक पर्वत मेरु के रूप में इस भव्य मंदिर परिसर का निर्माण किया गया है । मन्दिर को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त रंग तो अब फीका हो गया है लेकिन वास्तुकला और मूर्ति सौंदर्य अभी भी संरक्षित है। मंदिर परिसर के विशाल परिमाण अत्यंत प्रभावशाली है। हिंदू मान्यताओं के सारे देवताओं का मंदिर की मूर्तियों में प्रतिनिधित्व है। शिव और विष्णु को उच्च सम्मान दिया गया है।

प्राचीन तमिल ब्राह्मी लिपि का मिस्र में मिलना

क़सीर-अल- क़दीम, मिस्र के लाल सागर तट पर एक रोमन उपनिवेशणके एक प्राचीन बंदरगाह पर खुदाई में प्राचीन तमिल ब्राह्मी लिपि में लेख के साथ एक भंडारण मृद – कलश का टुकडा मिला है । इस तमिल ब्राह्मी लिपि के लेख को पहली सदी ईसा पूर्व का दिनांकित किया गया है. एक ही लेख को जार के विपरीत दिशा में दो बार छिन्नित किया गया है। शिलालेख पर पढ़ सकते हैं – 'पानाई ओरी' जिसका अर्थ है एक रस्सी जाल में निलंबित बर्तन। ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन के मिट्टी के बर्तनों के एक विशेषज्ञ द्वारा इसे भारत में निर्मित एक भंडारण मृद-कलश के टूटे हिस्से के रूप में पहचाना है।

तमिल ब्राह्मी लिपि के साथ ठीकरा ओमान में पाया

अब प्रकाश में आया है कि एक मिट्टी के बर्तन का ठीकरा ओमान में खोर रोरी क्षेत्र में पाया गया था जिस पर तमिल ब्राह्मी लिपि में खुदा हुआ था. लेख का अर्थ है, "नांताई किरण" और यह वर्त्मान से 1900 साल पहले, ईसा पूर्व का दिनांकित किया गया है। सुम्हुराम के प्राचीन शहर में इस खोज नें इतिहास के विशेषज्ञों के अनुसार हिंद महासागर के देशों के समुद्री व्यापार को समझने में एक नया अध्याय खोल दिया है।

बाली का अत्यंत प्राचीन हिंदू मंदिर

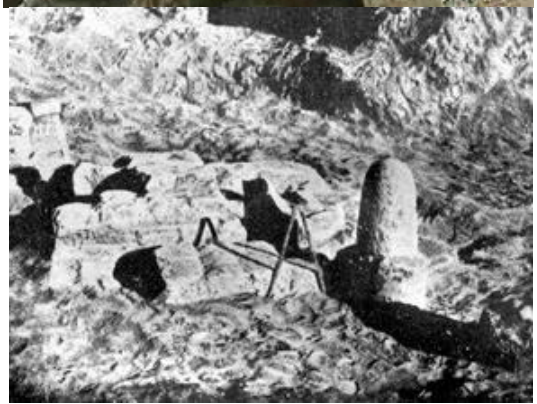

इस मन्दिर की बाली में निर्माण-श्रमिकों ने खोज की है जिसे पुरातत्वविदों के अनुसार इंडोनेशियाई द्वीप पर पाया गया सबसे बडा प्राचीन हिंदू मंदिर माना जाता है। श्रमिकों के द्वारा द्वीप की राजधानी देनपासार में एक हिंदू अध्ययन केंद्र में एक नाली की खुदाई की जा रही थी जब पत्थर के मंदिर के अवशेष प्रकाश में आये. उन्होंने बाली पुरातत्व कार्यालय को इस खोज के बारे में

सूचित किया और फिर इसकी एक खुदाई टीम ने पर्याप्त नींव वाली एक संरचना का पता लगाया जो कि 13 वीं - 15 वीं सदी के बीच निर्मित हो सकती है।

हड़प्पा में पाया 5000 वर्ष पुराने शिव लिंग

पुरातत्वविद् एम एस वत्स नें हड़प्पा में 5000 वर्ष से अधिक पुराने तीन शिव लिंगों की खोज की। यह दुर्लभ अभिलेखीय तस्वीर में हड़प्पा खुदाई स्थल से प्राप्त प्राचीन शिव लिंग को देखा जा सकता है.

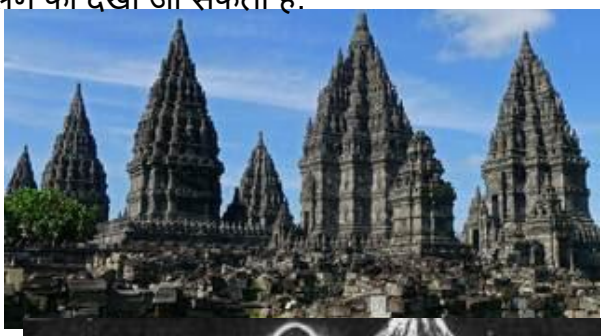

योग्याकर्ता में पाये प्राचीन मंदिर के खंडहर

इंडोनेशियाई इस्लामी विश्वविद्यालय, योग्याकर्ता में की खोज की गयी एक प्राचीन इमारत के खंडहर को हिंदू देवताओं शिव और गणेश जी की पूजा के एक मंदिर के रूप में पुष्टि की गई है । इस स्थल पर प्राप्त लिंग, शिव की पूजा के लिए प्रतीक और योनि दिव्य मार्ग या जन्म स्थान के रुप में प्रतीक हैं।

हनुमान का रहस्य: 'बंदर भगवान' का खोया शहर मिला!

स्पेनिश में 'ला स्यूदाद ब्लैंका' या 'श्वेत नगर' के रूप में लिए एक महान नगर मध्य अमेरिका में पूर्वी होंडुरास की मौस्क्विटा क्षेत्र में स्थित होने के बारे में इतिहास में अनेकों उद्दहण हैं. शोधकर्ता चार्ल्स लिंडबर्ग मौस्क्विटा, होंडुरास के जंगलों के उपर अपनी उड़ानों में से एक के दौरान 'बंदर भगवान के खोये शहर' की एक झलक' पाने का दावा किया है जहाँ किवदंतियों के अनुसार स्थानीय लोग विशाल 'बंदर मूर्तियां ' की पूजा करते थे.

थिओडोर मोर्डे, एक अमेरिकी साहसी यात्री ने लिंडबर्ग द्वारा दी गयी सूचनाओं पर आगे काम किया और दावा किया है कि वह अंततः वर्ष 1940 में खोया शहर पाने में सफल रहा. उन्होंने दावा किया कि बंदर या हनुमान की एक विशाल मूर्ति के सामने स्थानीय भारतीयों द्वारा बलि दी जातीं थीं. हालांकि इससे पहले कि वह उसके सही स्थान की घोषणा कर पाता, वह लंदन में एक कार द्वारा मारा गया. मोर्डे मूल रूप से हर्मन कोरटेज द्वारा वर्णित 'व्हाइट सिटी' - देवताओं का स्थल और सोने के छिपे भंडार की तलाश में गया था।

बंदर भगवान की प्रतिमा की खोज

ह्यूस्टन विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय एयरबोर्न लेजर मानचित्रण केन्द्र के शोधकर्ताओं ने मौस्क्विटा क्षेत्र के ऊपर उड़ानें भरीं और उन्हें होन्दुरास के पूर्वी छोर पर जंगल से से अटे एक विशाल प्राँगड में प्राचीन पिरामिडों के अनेक अवशेष दिखाई दिये. होन्दुरास के पश्चिमी अंत पर कोपान नामक शहर है जहाँ कि प्राचीन कपीश (बंदर भगवान) की प्रतिमा की खोज की गयी है. जिस बंदर भगवान के बारे में पश्चिमी देशों के विद्द्वान चर्चा कर कर रहे हैं वह वास्तव में भगवान हनुमान से संबंधित हो सकता है।